



संज्ञा
संज्ञा

श्रीगुरुभक्तानामस्तु

३

五

[illegible]

विस्माय य दमडाऊहात ॥ हावा हात विनीत कथ्युवा नन्दे कमल्य ३ निः ४ य ये के स नपा हं सर्व संकल्य वि
 कथा माननानि यमरा शास्त्रे यवय विनिर्ग ॥ कथा मह होना थ्य य यीर का न सी हि र्ग शा अथ र्ग गव यो व
 ऊ का लो लो नी शं द य व विस्मायि समा य य दमडाऊहात ॥ अन्त्य क कथु ना ही नो दी य काम स दवा हे ना स वि कल्य
 विही ना ही नी ॥ य य क नी वा क ला मान जान नि भा ना य ३ सर्व को द ह स हि र्ग कथा मह होना थ्य य य क कल्य न
 स हि र्ग शा अथ र्ग गव यो व कथु ना ही नो दी य काम स दवा हे ना स वि कल्य

कृती

कथं गिष्वाहवह्वायाजिनवागुननेक। निविठक श्वकहवाहकथयगोमूहावला॥ अथहगवानाह॥ आदोलीभवनंदयातु॥
येकेनिष्ठाश्वथासधंगन॥ येकेलीव्यकनुगुड्युह्नाकुलभगनशातमाहवोमिष्य॥ कनुगसेवदसयग॥ इवभावजयदन्यामन्य
धारावववडन॥ गनुयगीसवनीठा॥ धा॥ इहठाकुमिसवनयोवदावोक्षिमलुन॥ रमिठकुमिसवनंसघकेलैलकुदया॥ कनुयप
येमिकागमामावभांवीकाकेणीपवयसामुषाववभलुडमीसय्यवगुसर्वयेकेसुमद्यभवव॥ गनुयपाषधकमथानसलैघा
नयीव्यसिनहवस्यवसक॥ उभ्रवयवरीयाभिवठायीत्वामखावव॥ पुमादाऊननंसवन्नयस्यामीकववन॥ नल्यगीनविहवा

[illegible]

कवी

[illegible]

3

पीकलीकान्क स्याददिष्टादहसुदधान् ॥ उंकरिकसर्वमागामान्सकलेश्वरहृद ॥ वामहस्तकपातं दक्षीणकर्मवापदान् ॥ उंठकपातं
 ध्वस्तकर्मकाधायश्वरहृद ॥ ननोत्तमवर्गीसमस्तपुण्यपदाकावनवात्मन्वा ॥ उंठश्रीध्वस्तकर्मसिद्धाहृद ॥ उंठवर्गीध्वस्तकर्मवर्धु
 गदनयं वशागीनीनाम्नशीषोऽहम् ॥ आसक्तुपुष्पकीयकलहन्तयोपेक्षितकादयवुं ॥ अथगुप्तकीयकोहवर्गी ॥ गिथनगुप्त
 स्वर्गीश्वरसूर्यगह्वरमनावांष्टिगार्धवावनमष्टिगोनीयानयम् ॥ उंठवर्गीध्वस्तकर्मसुखपुष्पासयाकामसुखार्थकम् ॥ उं
 नाथकपादरागनाम्नमहस्यसिद्धावर्दीनीगह्वम् ॥ उंठवर्गीध्वस्तकर्मसुखपुष्पासयाकामसुखार्थकम् ॥ उंठवर्गीध्वस्तकर्मसुखपुष्पासयाकामसुखार्थकम्

कुवे

नंयुजयीलायको संनय संनय हयन हं नुक् अगिगं र्हु यडावाव वरुय सिध मारुय नसु छि काया सनामिका वा डू शस्त्रां डयी म
हील्लहं र्हु कावे सिधय ॥ कना शहास डमिनी पाठय ॥ मनः नुर्व वंदे ॥ अथाहं न वरुय नम्या दया मी धना नीना नाग मयुख ताना वडा
हम वना मयुनी दिग नोया संपाका ॥ किनु नसु वद मट्ट मधु तस्य य वना व कयं ॥ अथ वद सि म दाग सति य स्रु दय वदे प्र मय यो न
दय धनु ॥ अती गो धेरी वरुय मधु वीध क वरु सि ॥ ह ठे दय स मय य ह क नस्य वरु न ग ल व ॥ अन्म का ये स ह म व ड व व क
वान म श स व कि क द का लो नि सि व ॥ ह दे क म व श र वि य नि न वा य व स म यं य दी ह स्य सि ॥ म ग ॥ नि य ध व क यं व

१

मसिनी ॥ न गो श्व पट व न यी ला मधु सर यी दा प य ॥ न गो श्व पट म का मधु संपद न ये न य स्य य वि क्रं न दा व य ॥ न गो ला म व
पहा सि य स म य य ॥ हं यो न वा व नी य म्मा स वा र्ध ॥ ४ पु का गि ना अ नी का म नी यो म ट सि वि स्रु स्य न वा रु मा ॥ न गो म व क र्हु क थ
य न व रु वा न ना लो ल ग ॥ न गो व ही न ग ड म व य ह नु न ग नी र या क ह क न म र्हु न ड न्या व र्ण य कि ॥ कि ल म स्रु ह म व स म दा य म वि
ह क धा ॥ वि न म र्हु के र क के र ल ग स्या क ह व र्मा ॥ सा ध क न व क यं कि क ह ना स ह मा न र्वा दी या म वि ह क धा ॥ का यो र्हु कि म या म्मा सां या व दा
वा धि म ड र्हु सा वा ह ॥ अ हा म दी य म य र्हु स र्वा स र्वा स म यो न ॥ स व य या वि वा न न म स्या ह सि दी दा य न र्हु य म य थ का य र्ध य य या ग र्हु

काशी

[illegible][illegible]

कृषी

तुदावंतुसुसिहायव्यहीनं॥ध्यासमवकउभंविन्दससुदवाविनो॥पंकारुविजससुनं॥नगुशकासुर्जंविधुशवविर्बंकावजानेकेन
इहहंरुनी॥यल्ल॥न॥न॥म॥का॥त्य॥क॥ध्या॥ता॥म॥का॥स॥ह॥म॥य॥ट॥सं॥ज॥म॥ग॥गु॥या॥मी॥उ॥न॥स॥य॥म॥रु॥व॥य॥न॥भ॥ना॥रा॥स॥का॥न्रि॥या॥न॥
मा॥म॥का॥र॥ग॥य॥न॥सा॥का॥न॥रु॥क॥व॥सा॥ह॥न॥४॥य॥न॥रु॥सा॥ह॥आ॥द॥वा॥नि॥स्यं॥न॥व॥लु॥र॥य॥रु॥नी॥४॥स॥य॥र॥स॥भ॥ह॥न॥४॥रु॥न्या॥न॥द॥व॥न॥न॥वा॥का॥त्य॥पी॥न॥
वी॥प॥ध्या॥त्य॥रु॥क॥य॥न॥४॥मा॥म॥का॥मि॥ग॥न॥सं॥व॥रु॥की॥न॥व॥क॥स्य॥य॥न॥४॥न॥नी॥दी॥मा॥म॥कि॥रु॥क॥मा॥ग॥नी॥सं॥य॥क॥म॥य॥न॥४॥ग॥या॥वा॥ति॥गि॥नी॥ध्या॥
तु॥द॥व॥जी॥स॥र॥य॥न॥४॥य॥ज॥गु॥ह॥क॥वी॥स॥य॥वा॥म॥या॥म॥स॥म॥दि॥नं॥॥न॥रु॥न्या॥न॥रु॥क॥य॥न॥४॥दी॥नी॥यी॥उ॥नी॥४॥सं॥य॥रु॥प॥द॥स॥य॥व॥गु॥मा॥र॥वि॥म॥

६

दना॥वा॥म॥ह॥मि॥रु॥जा॥नू॥के॥क॥क॥वा॥क॥रु॥या॥न॥क॥॥व॥स॥ध॥न॥रु॥य॥के॥के॥वा॥म॥ज॥न॥ग॥नी॥रु॥नी॥॥रु॥का॥त्य॥रु॥क॥मा॥र॥जी॥नी॥स॥व॥रु॥की॥वि॥नी॥नी॥॥य॥के॥
वि॥रं॥क॥मा॥र॥के॥स॥त्रा॥ल॥का॥स॥रु॥वी॥नी॥॥वि॥रु॥य॥दी॥का॥र॥॥व॥क॥व॥रु॥द॥यं॥वि॥हं॥॥ल॥व॥य॥सि॥र॥वि॥य॥न॥सि॥वा॥हं॥व॥लु॥वी॥द॥व॥४॥मा॥ग॥जी॥म॥ध्या॥म॥
क॥ान॥था॥जी॥न॥ए॥व॥॥स॥वा॥व॥स॥रु॥क॥गु॥मा॥ह॥रु॥४॥रु॥ज॥द॥॥नी॥ग॥व॥का॥लु॥स॥म॥य॥रु॥॥॥यी॥ना॥व॥रु॥॥न॥स॥य॥पी॥रु॥धा॥व॥के॥के॥ने॥स॥नी॥यी॥नी॥व॥का॥व॥
॥रु॥ज॥गु॥ए॥रु॥का॥॥वा॥ग॥व॥जि॥कां॥ध्या॥य॥व॥जी॥रु॥॥ध्या॥मा॥रु॥॥ध्या॥मा॥मा॥सा॥न॥का॥न॥क॥॥धु॥वा॥व॥जी॥रु॥ज॥गु॥ध्या॥गु॥स॥य॥रु॥द॥गी॥मा॥व॥रु॥॥
॥वा॥द॥य॥नि॥क॥नी॥॥द॥व॥४॥रु॥क॥ध्या॥दी॥न॥गी॥नी॥दी॥ध्या॥रु॥मे॥गी॥उ॥वि॥व॥जि॥रु॥दी॥ही॥मा॥गु॥न॥स॥हा॥व॥नी॥म॥वि॥ज॥व॥ही॥गी॥मी॥स॥व॥स॥वा॥रु॥गा॥व॥॥

रुची

[illegible][illegible]

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १ ॥

॥ १ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कृपे

१३

न्यायदाता भगवान् राम न्यायदाता मीक यदा गता इति मदीयमी स दत्ता गुमानसा न्यायनेव उक्तं च रत्नानुशङ्क वं उच ॥ स्वमपुत्रायीरु
हणी स्वमपुत्रायी नामक १ गवा हं जननी रत्ना हनी नी रागी नयी का ॥ सफली ४ दूय देद रित्वी मध्वे दास वठ स ॥ स्वमक पद क री गनु
वाह स्वामी नी मगा ॥ य न व व स या म स्या १ नि हं वं स य मी ड लो ४ व द रु ने द ग वा द स र्वा न ड ४ क रं य रं ॥ स्वममाता पीतु हा यी स्वमवहा
गी नयी का ॥ हनी नी ए न हा यी व ल स सा र्वा र मानी का ॥ गवा हं सर्व थ दा स नी ह की य रा य न १ य स मा रु पा या मा न स ह द यी
नी वा क्ते लो ॥ गवा हं सा र्वा यं मि स र्वा म यी ला म् ह र्म ह ॥ य ना नी ह क र्म म स व क्त व द व र्म म १ य द र्म वा य य ह स द र्म य र

सुविश्रुता ॥ वक्तु वर वि गं द ला क र न यी उ य द ह ॥ तं मू र्ख ग ल र वं द र न स द ला प ना र य ॥ उ न र स द र्म वा क र द र्म वा व न म
नी म री वा का य ज त ए न स यो गा दा स का र व र्म ॥ ग व द्वा नी वा ह मा गा वा ड क ली स यी ॥ म द य उ र व र्म वा क र व र्म व स न स न र ॥
मया स भ वि ना य क म ल मा न य मू पा न व य क म ह श व श व स द र्म म व ड डी स र्म ॥ ग्री द र पं क डी य म म थ कि र ह री गं ॥ अ
हा स र वा व गी क र्म व क्त व द र्म वा क र व र्म ॥ वा गी नां स र्वा द र्म वा क र व र्म व र्म वि व डी नं ॥ मा म मा न त र्म वा क र व र्म व र्म वि व डी नं ॥ स र्म
ध्या द य ग न्द ला म ना य द नी बी क य र्म ॥ स र्म व र्म ग न १ य द र्म म थ व न य र्म ग य ॥ द र्म वा क र व र्म व र्म व र्म व र्म व र्म व र्म व र्म ॥

कृष्ण

मदीयगीदयेयमासवलीसमरिग॥खवर्जकगुपकीयसवे४ विरुपयजय॥वायवायखयनमसवासावमनरुव॥वज्र
कुमसीरुवयकवन्कसनीह॥द्ववनिमीमीनाखयनीविरुयेकवेगसा॥दावयखजोकेसोदयीनिश्चसाभरविरुगु॥नरेय
खरुवदद्यात्विस्मर्त्यपीयक्ष्म॥यानमोदरुगोवपक्षमाहुविचिरुयम्॥मोमकांजननीस्वररुजगमांसत्तम्यावनी १७
मिवां॥विषवादीरुनीन्दयनिमस्वराहपायकमिहिना॥मनेवदुबोमरुनबकबोडसदाइरवीगा॥कुन्दगीवरुद
निदववदवकिरुनिजल्युय॥कीमेलयागुनमोहं॥सर्वसत्त्वपरीगरुहाकयायनीजावकांमो॥विरुपकीसिगहा

आमाकावत्सजनदेयेजनमयीएसगीलीकया॥सावेवयानान्यधमोवजयाठीन॥आमिगुदमनगखा॥सुशीयसव
वगशयसासनमागुनमकववयगसद्व॥यकेवविषया४मो॥दीययनसंसिगा॥गमहासीगाकयासुवदरुजगीमान
वाभससावावविनीमूकसठमोभेननहिमहाएध्वमहाएध्वप्रसाददूरत्रयिकमगन४गांठरुगोदशीखाईदकनयी
उयम्॥रुचिजिखारक्यामीगाके॥रुयादिनामिदा॥रुयासुखादयवचंवके॥दावराहन॥वधजान॥गुहवेववन्वके
सुवसदन॥यादवादनवन्वके॥रुमीवादीमवन्व॥सनदलकावेववन्वीउसे॥कउमगीजाववन्व॥यगावगधयादककेश

करो।

[illegible]

कनसंस्तुत्यदीपादेवेयसाययम् ॥ वन्द्य ४ समदन्तकाष्ठद ४ पञ्चकवायीसाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ सत्य
पीतामसवराजोदनापीथीस्तु ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ सत्य
वक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ सत्य
३ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ सत्य
वक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ गच्छापादयमोवक्ररुत्तमास्तुथाययम् ॥ सत्य

[illegible]

कवी

पनखानका रुखामयसुन्दरीदवा मरुवाहीहि नएव मूलासुखामरुमहाहसनस्यार्थयत्तमं वायसन्दरमी नववत् ॥ ५ ॥
मन्मथं मनुए मन्निष्ठसुखामोमं ॥ ध्यायाम्यन्वेदेन वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ६ ॥
रुद्रदण्डावधुतारिनालिकाभरु ॥ ७ ॥ अथ मन्मथं ॥ ८ ॥ यत्तु रुद्रदण्डावधुतारिनालिकाभरु ॥ ९ ॥
यन्मन्मथं ॥ १० ॥ यन्मन्मथं ॥ ११ ॥ यन्मन्मथं ॥ १२ ॥ यन्मन्मथं ॥ १३ ॥ यन्मन्मथं ॥ १४ ॥ यन्मन्मथं ॥ १५ ॥
यन्मन्मथं ॥ १६ ॥ यन्मन्मथं ॥ १७ ॥ यन्मन्मथं ॥ १८ ॥ यन्मन्मथं ॥ १९ ॥ यन्मन्मथं ॥ २० ॥

इति

यथैव यत्नं नावाक्यं सोऽयं कमानसः। कवीनां सिद्धयन्तजानयादप्यगमः। एकस्य स्वर्गं शुक्रं। मतिगवापीति कथा॥
नासिनसि याम्। सिद्धयन्तामर्थं रक्षय। पुनस्तुति कथापनी प्रह्लादमन्त्राय च मयि रोम॥ काठं कथनं न ह्यप्यश्न कथयत्समा
न्मकं। योऽद्वयं च मयि मयायनः। कामं च रक्षय। मतिजिह्वं नमः। पञ्चमी श्रुत्येन सुखानि शिष्टान्। त्यक्तं कमनं तद्वन्द्यमन्या
न्यसमावहक॥ नमनस्यां स्याद्वा। साधितं के मलसुखं। तदुच्यते। मया यदधरं कर्म नमः तव या विदुः। नागोऽपि सिद्धी
यन्तार्थं मया या विदुः। प्रकाशितं। वामजं चापनी श्रुत्य मयि। योऽद्वयं स्यात्समावहकं। स्वर्गकामसंख्यं दहसंख्यं च धारणी स्यात्

७८

वामजं चापनी स्यात्समावहकं। स्वर्गकामसंख्यं दहसंख्यं च धारणी स्यात्। ली स्यात्संख्यं चापुत्रं च यथै
कं कर्म। रमोपायं च दहसंख्यं सप्तसंख्यं दीयकं। स्वर्गकामसंख्यं दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं
संख्यं च। श्रुत्येन दहसंख्यं सप्तसंख्यं कामसंख्यं दहसंख्यं। मयि कर्मानुष्ठापनं रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं
पुनः। स्वर्गकामसंख्यं दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं
नीत्यासंख्यं दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं। रमोपायं च दहसंख्यं च दीयकं

गयी

त्यन्तस्यैवायत्तु शेषायाः मन्त्राणां महत्त्ववधा गीतवर्गस्यैव विना सयही गं योर्दं कृत्यामात्रं यथासंयत् ॥ अन्तर्गत्या
यीत्यर्थः विना मन्त्रं यथासंयत् न विना मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।
हमन्तीति मूढी मूढदया ह मन्तं न मन्त्रं लाहीन न्यवेदनाह ॥ हो ह मन्तं कीर्तयामास वदन्तं मयं साधनाया धाम्नेयामपी १९
हमन्तानाह ॥ अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।
वागोरीवन्ती मयी वदन्ती देव गीतं लाह विमुक्तिं । मागन्तु ४ अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।

यत्रैव मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।
यानीत्येव न ४ कामं विवडा कृत्यन्तः ॥ नृवीप्रमदरागी नानाविधाका समाधव ७ ४ ४ सिद्धाकार्यं कृत्यन्तः ॥ अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।
मन्त्रीप्रवाहस्यैव गीताया विना किं गीतं न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।
वैदिक्या प्रोचधु महावाक् । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।
अमन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः । अन्तर्गत्या मन्त्रं यथासंयत् न ४ एवमस्यैव गत्यर्थः ।

३०

[illegible]

मूर्तिमुनीश्वर्यागोसनाही नराज्वयामयमाशमीयदीक्षाज्ञानाग्रसंभवमुद्योगेकथागधमदाहंकारधरकउद्यदीवक्रम
 रंरुन्नादयीपायेनलोयक॥मस्मदेवविभवाथरावचलुवाषर्ष॥यनेवनरकंयायागीऊनवाबोडकसंम॥साजानयगुर्न
 नेवमाक्षयानिनशसय४मन४एवमसंभवायएधमीईम॥मनस४कत्यनकावंगनीसुनादीरुदीम॥विषनामनिर्णय
 वरु४॥दायस४इय४मदवमनिर्ण४रुत्वासस्वमाद्भवद्वर्ण॥नथमस्मिनरुत्तदेवीपुद्गाश्वमीरावरा॥कदीदयैरकर
 यमावमुद्योगमूदया॥वज्रचिभिलरुत्तावददीदसमूहम॥मदीयंद्यकं४॥रुत्ताहंकावमूहम॥यदीवक्रम

कुंभी

मंसन्यासपीपायेनसिखन ॥ मदीययमाअयमहाकावे कवेनसा ॥ मावयन्मत्सयकीवयागीनीवसिखन ॥ नीर्दयाच
केसाकृष्णमावधायिविहका ॥ मीयसहीरीयायनमासामर्थयुकागिर्ग ॥ ६० ॥ खकन्तवीदायग्रीवछगहावीषमनकुंदहरी
भानयदस४सयम४ ॥ ७५ ॥ ७३ ॥ ॥ अथरगवान्तरगवणीयकेगधुसममहृत्वाह ॥ खदीनायागीनारयहामयकु कथंयु २१
याहगवरीवावाधीनकनयागीनीयाहविचयी ॥ अथरगवणीअह ॥ यावदिष्टमन्त्रेकीक्रीरयंरवनगुय ॥ नमदीयमन्त्र
यनीचानीवकुत्तंगर्ग ॥ यदीवाहवीदेवयकनीराकसीनथा ॥ नागीनीरुमीनीकन्याकिन्नवीमानवीनअमन्ववीनारकी

देवमीयककन्यार्थयुनीका ॥ वाअनीकनीवीयेमभाभुडावाएनविकरा ॥ कायहंवाअरुनीववीरुनीवास्तडिनी ॥ वनीअनीवा
वीनीवेमभावाएवनीवर्मकावनी ॥ रुरुनीनीलुदीनी ॥ गम्भीरकुसी ॥ गवरीनीमया ॥ कवीनीमोनीदी ॥ गधुवनीनी ॥ कर्मकारीनी ॥
नार्यानीनथीनी ॥ कनकासीनी ॥ सुहृकावीनी ॥ कवरी ॥ अकनकी ॥ कम्हकावीनी ॥ वागीनासीनी ॥ कायादीनी ॥ गवरीनी ॥ देववरीनी ॥ व
कमासीनी ॥ ॥ मयाहिकुंकावीनी ॥ यकावी ॥ यमासी ॥ वसिताहरी ॥ पथजीनी ॥ कासकावी ॥ व ॥ हडकागी ॥ समाविकु ॥ नमवावरीनी ॥
हार्वामीनी ॥ काशीनी ॥ नयौका ॥ ॥ वरे ॥ कावहसा ॥ देवन्नयाव ॥ सुहृमीनी ॥ कुकीनी ॥ पागीनी ॥ देव ॥ वछावापीन ॥ पविनी ॥ ७७ ॥

54

[illegible][illegible]

[illegible]

नृनृपुण्ड्रपादात्मकं जगत् ॥ अथ हठवर्णनावकादयाहीमिर्यं इव यमी ॥ हठवर्णनाह ॥ कामधाम्मुहिनाः सर्वदयानायत्री
 वकादयः शमादामागं नजानन्ति मुययत्थनि सवन् ॥ सन्निवन हवंचु इह हं कृमादीक ॥ नमनाय समाजानंदवम
 समसाधना ॥ नूनघृष्टनयाताव श्रद्धाहीनास्वर्मजना ॥ विहं नदुर्वर्ग नत्वमयायनत्युगपीनं ॥ मथायनकलोकात्
 काही मत्तार्थकशिर ॥ नकं कर्मनः सर्वश्रद्धायन्मयायनः ॥ नस्तो धरापीनं सर्वगीर्णं यो विप्रसिद्धयः ॥
 ॐ हठवर्णनावकादयाहीमिर्यं इव यमी ॥ ॐ ॥ अथ हठवर्णनावकादयाहीमिर्यं इव यमी ॥ ॐ ॥

कृष्ण

मासवीनवागं॥ रुग्णवानाह॥ सर्वस्य सर्वथावीवसर्वरुग्ण सर्वनासकं॥ सर्वरूपधवावह ४ कलाहलाप्रभुसुखी॥ येन
वदयलसलायाकिठीनयगां॥ गनननेवदयधालुगंरुंसाकहगद्य॥ कविद्वज ४ कविधर्म ४ सखक ४ कविर्गणीय
ककविगुनावकयकसकविगुदयासर्वस्ववक्तुवित्तानयप्रयक ४ कविगुल्लवदर्याहं विस्वरपीनसंभवता-
जुहीपीयरुग्णपीनयनक ४ कविगुश ४ कविडागी ४ कविद्वयी ४ कविमीरी ४ कवि ४ कविगु ४ कविज्ञासुप्रिययाहं शो
गुदयनसहिरा ४ मनीयंरुग्णनेकुमन्यासिकिगुविप्रने॥ वरुदगुपुहंदाहं जन्माहंजनकपीसी॥ विज्ञाहंम

२९

हंरिदि ४ सर्वरूपनहंरिग ४ नृजिगीवहंमगुवर्दयाध ४ वयहं॥ नृद्वयम ४ पापीनगकर्मरुचस्वहं॥ ३०
दधमयं सर्वमीदं दयनमेव॥ हामयंमवमीवैअंयामीनामखविनया॥ नृधहमवमीरुह॥ किरुगवनवैवदव
यं॥ रुग्णजनाह॥ नवापयवविद्वदययथ सर्वविशयोर्गंमत्वयाद्यजनीदं सर्वरुत्सववजगंमं॥ ४००००कन
विदायिनीवपुमनावापनगनुविद्यवहसपकादम ४॥ ३०३॥ नृधगगवमीरुह॥ मनुष्यंसाधनरुहीसकि
कपीरिर्कमधावग्णकहिपुयागवामारुग ४ गनादीक विवनाहं वाविनाहं वाविनाहं वाविनाहं वाविनाहं वाविनाहं

५३

विष्णुं वापी वासुसमस्तु नमः ॥ यद्विनीतु धनं विदुः कुरुता सीसाधनं ॥ सातथु मनक विह्वलं निश्चिन्तनं वदयता ॥
अथ कनकाभाह ॥ बहुशयनं साधीष्टमनु धनमावहन् ॥ उधमसाधयन् साधकसुखं कुरुदं ॥ मत्समन्त
मिनीरुद्रां सर्वमनुपसाधकं ॥ नीरुद्रां नीरुद्रां यदुक्तं सुखं विदुः कुरुता सीसाधनं ॥ ३०
सादना देवास्तमनुयमाजयान्ति दीर्घा दना ॥ नस्तु साधुदत्तमनु मरुत्तु साधयन् ॥ अथ नीलसुन्दरं साधयन् ॥
नद्यादयकां मृदुमसाधनां यदीदृशस्तु उयला पीना ॥ सर्वसाधकं नीलसुन्दरं साधयन् ॥

[illegible]

कृषी

अथ ४ ममा हगवनस्य यमवान् नृमी ॥ नमा १ धनस्य पाद पादसायकी ह्यास्य नदी ॥ नमा हगवानाह ॥ सोहादि वंदना
मीमी ॥ साधकनव कृषी वधत्वं मयदीदी ॥ नमा हगवान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
कृषी कृषादस हनी स्वबाधो विमान् नृमी ॥ नमा हगवान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
वक्राजन नृमी कृषाद कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
वक्राजी नृमी कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स

३१

यह कृषी वक्राजी नृमी कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
असीमीमी सोहापरी नृमी कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
नृमी कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
मदी नृमी ॥ नृमी कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स
सोहापरी नृमी कृषी दय कृषी कामलोता ॥ नृमी विमान् नृमी सदी सपु वि स्यमी ॥ सुदीरमा नृदिरे वेदवी कृमी ४ ४ हिह स

कृपे

कामसुखी बज्रशायी नीलनंद विद्यापीठानी साधयन् ॥ वटकासु मर्यादोददी राजाने के देवदास मज्ज ॥ नीलारुमाणा निंदनी
कोकनमावा हावीनी बलमावा बंगलुवीणि श्रीगुवनी व नीसलायसुवागर्न साधयन् ॥ उर्वरुया वलु मंगव वडरु रुसगी
मुकुं गनीग्वर्वाह कर्तुन नवहैरो ॥ उर्वलोकसुत वज्रयानी मेहे श्रीपुहमीन् वाधिसखन् ॥ उर्वविधमिमीसी विसर ३३
पुह्मिनुव नसायन् ॥ उर्वमयवाजीगा दीनरुमान् ॥ उर्वमयथीदीनरुमान् ॥ उर्ववज्रककासादीन् वज्रकान् ॥ उर्वसुत्रस
खामिपु रुकादीन् साधयन् ॥ सर्वश्रुताकावादी यमी ॥ अर्थकवातनहिधमी ॥ मदायनडिनीयवाव रुकां ॥ नगधायी

वेरुदाहकीयवावमारुहन् ॥ नगधायीवन् पूर्वरुगमहादलुहान् ॥ मदावामजान्नासथयादनवाकमगा वज्रयथाव
लिधमी ॥ गनीवु अघुण्यापी सधमी ॥ महुदंदलु मलासावनसाधन मनु विदरुनी ॥ उर्वलु मलवावन वागदु २ रुह ॥ उ
प्रादीसिद्धीनु अर्कमसाधयमी याजयन् ॥ याजाक्रमधुनमर्कहनहनमी याजयन् ॥ उर्वमकवादीवार लनसुवीनीय
कननकथरुमान् विधीदरुनी ॥ सर्वकोपनासयनिमयाजयन् ॥ उर्वहृवहय रुवावनमागु लवकी कथमी ॥ उर्वमक
वाजाव लन सवनमागु लव का कथमी ॥ वज्रसामियाजयन् ॥ उर्वसर्वरुकासावहमी अथयुक्तनकमपीवोहंखा

कृषी

अथ यमं नामासन्वाश्रयं सत्तनवापि विजयमस्तु महीमजाश्री कीर्त्यादी ठाहीनं माउयम् ॥ सर्वत्रय सर्वगीमाय
नकासेव किन्वादी कमयसावयम् ॥ अथ यमी कयाश्रयक ठावावदय. अस्तु यज्ञाने जर्मं मनु कृतासु एदी कृता
केवह आस नवयुयी लाहावे सुमावयम् ॥ वातानीव की कबीकी ॥ त्रकशवात कमीगी थाइयम् ॥ मदन नवयुस
ठठुतसाष्ट एठवी की कृतामनु ठठी ठुई मनु मही दीरवी बाजी का दी नायाश्रयम् ॥ नम ४ कृठ के नम सुकी वय
न ॥ पुनीवापिन मस्वकी की री ग हवगी ॥ दवदम स्वमूर्त की लय विथार्य ॥ ठुय २ नीरव नम् ॥ एव वापि की वयम् ॥

मामं मां ठाकी कृयम् ॥ दवद हवापि की की वयमीयादी कृय की लयम् ॥ मायं लयमी नवद हवा कृय की लयमी नव
मान्दवाष्ट की लय कनसु हनवा ॥ सीश्वर्य कृ के न वायान्य ठानी की लयमी गानी मस्वतिरवी मनी विथार्य कृवा नीरव नि
दवद हवा मस्व की लयमी यादं ॥ ययम् ॥ लवात नवद नम कृवा ठयमी ॥ नवद हवा कृठ यमी यादं ॥ अथि मनी नम ठानी
हमना जल यम सयानि कयाद्व ठयमी ॥ नवद हवा कृठ यमी यादं ॥ नवद हवा कृठ के सीश्वर्य कृवा ठयम् ॥ नवद
हमना यम यादं ॥ अथानी कमस्व हव नम वापि विजयमस्तु महीमजाश्री कीर्त्यादी ठाहीनं माउयम् ॥ दवद हवा कृठ यमी ॥

शुद्धी

मन्त्रास्तुती॥ यद्यपि वागीश्वर्यादिमयवपि च सत्त्वरुचाननादि मन्त्रलोचनमनुष्ठानमाकर्तयन्॥ दिग्गजस्य मन्त्रस्यार्थनाम
चमोपायः॥ सर्वथापि अतिरुचिणी॥ कथं च उदकमयमाकर्तयन्॥ हस्तमावृण्वन्॥ दवपदस्य विष्णुस्य कीर्तयन्॥ निविर्
कृतम्॥ नृपतिं गौरुमायन्तु सहा ना नाना नमन कर्तुं न पश्ये यो यो आत्मा यो यो गीर्धर इत्युक्तं यन्त्रावृण्वन्॥ अमर्कमपि ३३
मानयन्ती कर्तयन्॥ प्रवेष्टुं शक्यं सत्त्वरुचिणी॥ अमर्कमाकर्तयन्ती यार्थः॥ आत्मानं च मन्त्रानि चानादी वि
पूर्व आत्मा जयन्॥ शरैर्महाविनी यार्थः॥ इति कुरु विनाशाय हं शूद्राद्यर्थं यत्तु कुरु कुरु नलिमि विनाशाय मन्त्रोपदेशः

गान्धर्वकृतम्॥ सर्वलोकानि नाशयन्ती यार्थः॥ वन्द्यं गुरुस्य गुरुवा श्रीरुक्मिण्यपि रुक्मिण्यनन्ताय गुरुवती
स्याम मर्कवैलस्य गन सदा भवन्त्युक्तं यन्त्रा यन्त्रोपायः॥ त्वत्समायना श्रुदीर्ग रुक्मिण्यस्यामवस्य स्यामवर्क
यथावत् काननरुचिणी॥ गुरुस्य दायकं कुरु माय रवणी॥ अनन्तवदमन रुचिणी रवणी रवणी मनः शिवायसा
धयन्॥ कुरु लोको गीतुं नागने नकादिपात्रे॥ धर्माधीनं अरुचीनं॥ उपायी कुरु कुरु वनी॥ अथ गान्धर्व
श्रवणस्य मननना गान्धर्वं कुरु यन्त्रं॥ गुरुस्य सदा भवन्त्युक्तं यन्त्रा यन्त्रोपायः॥ कुरु कुरु सदा भवन्त्युक्तं यन्त्रा यन्त्रोपायः॥ कुरु कुरु सदा भवन्त्युक्तं यन्त्रा यन्त्रोपायः॥

ॐ

यद्यपि ॥ दृष्टं च तद्वयमो ममाश्ननं कृता इह ह्यदीव वसन्ता पत्नी त्वत्पुत्रं यन्ना ॥ अथ मद्यं यत्र जायते तत्र यद्यपि
कामं नृसिंहं गच्छेत्सं हृदये योऽरुणा ॥ अन्ती हस्तं दशमं दाव कुरुत ॥ ७ ॥ दिह गोप्रमानं शाकं लवणं यमन्ता वाम
यम ॥ कल्पे प्रथममात्रानं न कनको यद्यु कर्षं कनली पीत्वा नी ववत्तु स्यात्सामवेदा कनली मस्य ॥ गदी हवादी कर्षं
वामपादं दक्षतन्त्रयम् ॥ क्रोधवमसा रुक्मा म्मूकं रुक्मं नाहयानि मी कृत्वा कननीना सयनी ॥ वधका वकजीर्णं यदीति
पिंकलायम्ब मल्ल ए कान्मद्रादी दूतु शवा वननी मद्रा यो त्वां दुं देह का त्रिषु कदापि ॥ यत्सत्तु नो च रनदन्त्र धुम

३२

हा वधनं वमसा ययमी ॥ यदीना वसुदी यथ गदा रुगवान् रूढं ॥ मी युनरु म्मन नी वयमानं कला रु स्यमी रूढ का नेसर्
कीन दधानं ॥ नमो रुढं रुवनी ॥ अथ सप्त या विष्णु कला नृपुद ववसी ययि ॥ सद्धं रु रुजी यथी कला रु ए वका रुवानी ॥ अथ वन
मन्त्रा कौ सद्धं रुवानी ॥ दिनी यमा मन्त्र ह्या स यम वदि विमहनी यमा वमन्त्र ॥ ८ ॥ रुद्रपी मुमही मन्त्रा दया दवदा रुवनी ॥ रु
कपी मुमही नृ विना सत्रा यो विवि कद यम् ॥ यत्नार्थं मदी म्मन्त्र सद्धं रुवानी ॥ अथ क स्यमु यवन् ॥ रुद्रं वदि विना मुकु पुनी य
दमाद रुद्रं यो रु मा सिया वसु वरु यम् ॥ मा वामन्त्रा कौ दसु रुगु ए यद्धं रुवानी ॥ रुवानी विमह मन्त्रा तम स्रमन्त्र वरु स्य ॥



2

[illegible]

सादये नैव ज्ञानं पुनरपि कुर्यात्समासेन ॥ यो ध्यायामि न ह्यनन्तरं विविह कञ्चन ॥ हविर्मास उदय ॥ ध्यानं शिवयोग
 मगान्ते दधे लावनाय सा यथावदभिनायु कीर्तना ॥ सुवर्गं मया धामात्मानं पूजितं यथा दत्तं मे गौरवम् ॥ यथावदभिनाय
 त्वं ज्ञानं प्रहृष्टं कथय ॥ एतन्मया ध्यायामि न ह्यनन्तरं विविह कञ्चन ॥ हविर्मास उदय ॥ ध्यानं शिवयोग
 तन्मासात्पुनरपि कुर्यात्समासेन ॥ यो ध्यायामि न ह्यनन्तरं विविह कञ्चन ॥ हविर्मास उदय ॥ ध्यानं शिवयोग
 तन्मासात्पुनरपि कुर्यात्समासेन ॥ यो ध्यायामि न ह्यनन्तरं विविह कञ्चन ॥ हविर्मास उदय ॥ ध्यानं शिवयोग

यस्य धानि ४ विधः ॥ ये धानि निर्मलानि ॥ नवनवगणयन् यनानो दिशवर्कमहाबाहो ॥ विदुः पीनं धानं माधुर्यं लहुर्यं
 पुनर्वैष्णवकरीयसुदुर्लभं ॥ उच्यते च भुक्तं धानिनी ॥ यन्मम सदा हृदयं पिबेत् ॥ सदा यन्मम शरीरं निदिह्यते ॥ यन्मम
 नान्ध्यादीनां हृदयं पीनं ॥ हृदयं पीनं सदा पिबेत् ॥ विदुः पीनं धानं माधुर्यं लहुर्यं ॥ यन्मम सदा हृदयं पिबेत् ॥ यन्मम
 शरीरं निदिह्यते ॥ यन्मम नान्ध्यादीनां हृदयं पीनं ॥ हृदयं पीनं सदा पिबेत् ॥ विदुः पीनं धानं माधुर्यं लहुर्यं ॥ यन्मम
 सदा हृदयं पिबेत् ॥ यन्मम शरीरं निदिह्यते ॥ यन्मम नान्ध्यादीनां हृदयं पीनं ॥ हृदयं पीनं सदा पिबेत् ॥ विदुः पीनं धानं
 माधुर्यं लहुर्यं ॥ यन्मम सदा हृदयं पिबेत् ॥ यन्मम शरीरं निदिह्यते ॥ यन्मम नान्ध्यादीनां हृदयं पीनं ॥ हृदयं पीनं सदा
 पिबेत् ॥ विदुः पीनं धानं माधुर्यं लहुर्यं ॥ यन्मम सदा हृदयं पिबेत् ॥ यन्मम शरीरं निदिह्यते ॥ यन्मम नान्ध्यादीनां हृदयं पीनं ॥

[illegible]

अथ

[illegible][illegible]

श्री

कसदम्यमसंमद्य सायकनमयवज्जवलयकीनमयमी॥सरासोकागलंखवेषाकृतमुष्टोपिनमनीमुद्रमसमदेन
किठविनामधमस्यजयदुर्गंमज्जकठपदयवगु ॥आयमुज्जलादनकठकठीनमयमी॥सुखकदीजीवीयकुसुमकदव
नैरुसविषयैरुनीलकपादीनमयमी॥हवीममानसमुक्तंनित्यजीवित्यसुतकं कययामनामभामारीपदभीमजनावमी
सायनामभमप्रवहकरकननामनारुध॥रुज्जवकलसमवयसमीवकुठकुष्ठेनांयकलानंदायमज्जययीयमकु
स्थीनामभमनासकीयैरुसविगुज्जकठकरवाकनमुष्टंयुक्तमनावसमरकयविनासमभमभविनामनी॥हवी

३३

मदीचक्षुमाहनामय॥हवीममानसमुक्तंनित्यजीवित्यसुतकं कययामनामभामारीपदभीमजनावमी
कु॥सवनसहीमंगुष्टकुठिनामभमकपावदकावसमवकलरुधमोहंनमसंकाठकवीवकुष्ठमभमवीयम
मी॥हवीमकीविगुक्तंआदकंमममुनागीवेत्यहनामभमजिवसमुक्तनरुक्तयद्याकनरदिनमयमी॥यवकावदकावीय
यामकाविनामनी॥हवीमकिठुधरुक्तयद्यामनामभमकपुष्टयंविहंससोवदत्यामकुकाहुंवीयदमीदीयमी
किमयाविनमयकि॥मानुसंगवमंमुक्तनरुक्तयहुलंनमयमी॥हवीमकीमुक्तनरुक्तयद्वनामनस्यमी॥रुद्रवीडोवी

कस्ययनाकनाथशत्रुनमेवदेविहकरीहकस्यमाथामापीदिनव्यो॥आमसदकमूलकीजिकनयोसगर्थ
दहर्ब॥हुउकदमेनयीवसुमादिनव्यो॥अहमेनवेवपनामीहिकदहकदयकलापान॥दिलीदसमुठनरुन
शरकागीआवनामसमुठमुठोनीमदुदालसहभुजाननामामुठदमनरुकायदागकीहहहदयकविनय ३५
नी॥ओरुतासुचममधनाहकयसर्वनामनामहमीनकीरुमिकासुचममधनाश्रवीरुवीकसुचमविनाम
नी॥आसुकथवागववापुमापीजसीउधुधुवधुधुहसुसेधममधनावरनीहृयारुगीहकयविकासकमयकविन

मी॥एवचमधुर्वकवागी॥आमववागुलिपीपनीरुवीनकीदासहृयदीवउमधनायकाहृययथयवहसं॥
यमानोमुठीरुवीककासेधवान्तमाहकयवसवीत्रिहनामहामुठनसगधनापीवधुयमहनाममासुचयन॥
दूधम्वपीपनीरुधुयमधुवीपपीयकवदडागकाआदयानव्यो॥सुजासुतवय्ययामसुवासाकनवीहा
सपथद्रुधुनिमूतहाहृययलकीपुननाशन॥मुलीयत्रकवधहकयवधुकाहकी॥अरुनिकीमसीवनपीवधी
नमुपीपनीवोमानासुविहसानोसकाहृमूरुकाहृगवकसहकावामिःईसाहृधुकाजिनपुलीयासनककूपीह

[illegible]

33

सर्वीर्गवसकोलाभकमालवीतानीश्वरीलुनययनकमजठरसुखनन्दोकापीरोगनमस्तुकाभरीनन्दज्ज्ञाय
नमस्तुवन्द्यठारकमकायाननाभाभाभउत्तासयुधमविहंगलीभापुटीकायनयनादिभुजगवमन्दीमीश्वर
कृपयर्माभुमीकांरुकर्याव्याविषहकपनूलपुहवनी॥ईद्वीर्कद्विभुद्वकरीत्रिभुवेविर्जद्विभुपीलाश्रजाकान
तमायर्गवधयन्ःधननहकयस्यककयावदउक्रानतवनी॥अमन्ःकेरुद्वसमत्यरमासीवरागवांसुपनदि
सुलभकेकठयनाउस्यधरुद्वदकननचमनदन्ःपुमाविर्गद्व्यागुमन्ःद्वकापीकद्वउद्विद्वमी॥नाजीकसु

रुनी

मंरुणप्रदिपामयननरुपवीरमदनमवधययौल्लवकसुप्रमवजिदरुनेनेदवनवासपादनाकस्यजयम्॥
यंचावेसनीसहस्रनयवकासाहवनी॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको
नानीकावजावठीकलाहीतयुदकनयानेवचादंओगवही॥उकाकपेकोउमवस्यगकोदिमरुदकोमरुन
हमासीनननदुर्लभतिरुधिजांजीयदयदधवनीरुकेगौठी॥उं॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको
हंरुहंरुउंउंमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको॥उं॥नामवि

३३

वाशनहं४६॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको॥उं॥नामवि
यथमानावजीकवर्ग॥नमो॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको॥उं॥नामवि
उंरुहंरुउंउंमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको॥उं॥नामवि
हा॥सधिवि॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको॥उं॥नामवि
इकंदुदिननीकीयं॥अथमंसास्यरुनरुकोमवनीरुदखासा॥उदरकिंठंरुदरुदुर्लभक्यामुको॥उं॥नामवि

五

[illegible][illegible]



35

[illegible][illegible]

इति

[illegible]

सहस्रमन्दसमाधिस्तदधीममाकुशवयम् । इहकारुण्यमसंख्यौ दिव्यवती कुशमीनी अहवयत्कुण्डलीयाणी कुर्वन्निवो
भवायुर्न ॥ अथवास्तवकुर्वाणीधीः कारुण्यवती ॥ मृडीनां गच्छन्नेदपीणी वज्रस्य श्वरी ॥ बलमग्नीमावकी ॥
नकावाकरी कृत्स्निकी ॥ अमीकरमृडीनां दीप्योः कारुण्यमसंख्यौ ॥ नावीयाग्न्यामवस्तेः कारुण्यमसंख्यौ ॥ अमा
द्यमृदिनां व्यापारविधेयमानवः सत्ययकसंवरुसोमव्यमसंख्यौ इवज्जयागधरः श्रीमान्निर्मलहीनयुक्त
नी ॥ स्वकृत्स्नियवकृत्स्नीं वाधकन्यां च कथयाम्यहम् ॥ अनेनेसिद्धिं कथामी मृडयामेवधाम्यहम् ॥ अथवायुनी कृत्स्निकी ॥

मङ्गलार्चनम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

The image shows a fragment of old, textured paper. A prominent circular hole is located in the upper right quadrant. The entire surface of the paper is covered with a dense, repeating pattern of small, dark, stylized characters or symbols, which appear to be a form of shorthand or a decorative border. The paper is yellowed with age and has a rough, torn edge at the bottom.